पद ६

(राग: भैरवी - ताल: त्रिताल)

कनवाळू मूर्ति संताची। योगीराज महंताची।।ध्रु.।। आप परावा

कांहिंच नेणें। वार्ता नाही अहंतेची।।१।। माणिक म्हणे जग

तारायास्तव। आली विभूति भगवंताची।।२।।